श्री सतगुरु चालीसा

श्री परमहंस अद्वैत स्वरूप आश्रम

First Online Edition 2012
Shree Nangli Tirath

Downloaded from

www.nanglisahib.com

www.nanglitirath.com

More at http://books.nanglisahib.com

Copyright © Nangli Sahib

श्री सतगुरु चालीसा

श्री परमहंस अद्वैत स्वरूप आश्रम

तीर्थराज श्री नंगली साहिब

पोस्ट - सकौती टांडा (मेरठ उ .प्र)

|| श्री सतगुरु चालीसा ||

दोहा -

कोटि कोटि मम वन्दना

कोटि कोटि प्रणाम

आदि ब्रह्म परमात्मा

श्री सद्गुरु सुख धाम

दोहा :

हे सत चित आनंद प्रभु

श्री अद्वैत आनन्द

ऐसी कृपा कीजिए

कहूँ कछुक पद छन्द

दोहा -

सतगुरु चालीसा कहूँ श्री स्वरूपा नन्द महाराज

जिन दिनो जग तारन को सोऽहं नाम जहाज

चोपाई :-

परमहंस परमात्म रूपा |

आदि सचिदानंद स्वरूपा ||

पूरन गुरु दादा गुरु पाए |

साधू सिद्ध के भूप कहाए |

जिन यह नाम रतन प्रगटायो |

कल्प वृक्ष कलि माँहि लगायो ||

सकल कामना पूरन कामा |

घाट केदार कांशी सुख धामा ||

दादा गुर पित मात गुसाईं ,

विघा बल मो में कुछ नाहीं ||

केहि विधि अस्तुति करहूँ तुम्हारी ||

वेद पुराण लग लिख हारी ||

राम नौमी शुभ दिन प्रगटायो |

राम याद तुलसी गृह आये ||

बाल ब्रम्हचारी सन्यासी |

राज-पाठ ते भई उदासी ||

छपरा छप्पर महल सब त्यागे |

धार कुपिन ढाँप तन भागे ||

जग पावन अद्वैतानंदा |

नाम लेत कटहि भव फन्दा ||

भर्मण किये वन नगर अनेका |

जयपुर जाये चरण प्रभु टेका |

प्राणायाम ते देहि उडानी |

पवना में जब पवन समानी ||

धरती ते उपर रही देहि |

बसत देहि में भये विदेही ||

जयपुर सांबर ते गए टेरी |

दिन दयालु करी नहीं देरी ||

टेरी नगर देख मुस्काने |

प्रात:काल जल तोये नहाने ||

बैठे कर स्नान जब ध्याना |

परम हंस प्रभु तुरतहिं जाना ||

हम हूँ मरम नाहिं लख पाए |

कारन कौन टेरी हम आये ||

टेरी पहुँच सेझी हम पाई |

कुल वासुदेव शक्ति प्रगटाई ||

सत्संग सभा सायं जब लागी |

पहुँचे नारी-नर प्रेम अनुरागी |

लगे होवन कीर्तन सत्संगा |

संशय भरम भये सब भंगा ||

सभा बीच आयो इक बालक |

वासुदेव कुल को जग पालक

परमहंस प्रभु बोले बानी |

कर गहि बालक करत बखानि ||

एहि बालक कारन हम आये |

छपरा छप्पर छोड सिधाए ||

यह त्यागी तपसी यह योगी |

भेटहिं इर्श स्यों जिव वियोगी ||

जग तारन कारन यह आयो |

भयो प्रगट नहीं काहू पठायो ||

भुकुटि विलास दूज कर चन्दा |

सुन्दर रूप स्वरुपनन्दा ||

माया मोहनी रूप धार संगा |

नासिका तिल साजत बम अंगा ||

या को ध्यान धरहिं मुनि ज्ञानी |

सुन वाणी भूलहिं सुध ध्यानी |

जेहि खोजत ऋषि मुनि गए हारी |

आज पाए हम उतराधिकारी ||

परम हंस प्रभु की सुन बानी |

घर-घर होवन लागी कहानी ||

प्रभु दयाल गृह प्रभु प्रगटायो |

टेरी नगर माहिं प्रभु आये |

कौन पुन्य श्री राधे कीन्हों |

जाके उदर वास हरी लीन्हों ||

एह बालक ते इंद्र दरयो |

बूंद एक बरसा नहीं पायो ||

योगरुढ़ आसन रहा सुखा |

बरसा बादल रुखा - रुखा ||

नदी चनाव में फंसी नैय्या |

पहुँचे तुरतहिं नाव खिवैय्या ||

विनय सुनी सेवक की जबहीं |

नैय्या रोक दियो प्रभु तबहीं ||

गुरु पूजन को सेवक आये |

अंग-संग सतगुरु होए सहाए

सीमा प्रांत , पंजाब छोड़कर |

श्री नंगली को दीन्हो यह वर ||

श्री नंगली हरी को निज धामा |

बार - बार तोहे करहूँ प्रणामा |

धूलि तेरी मस्तक पर धारूँ |

श्री नंगली पर तन मन वारूँ ||

दोहा :

अमृत सत्रोत श्री स्वरूप सुधा ,हैं सतगुरु के वरदान |

कर स्नान जो श्रवण करे, हो सबका कल्याण ||

तब चरनन में आ पड़ा बालक “प्रेम” नादान ,

बल बुद्धी विघा दीजिये ,

निज आतम को ज्ञान ||